शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह- अक्टूबर, 2022

अष्ठम वर्ष अंक - 05

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: भाषा शिक्षण और सीखने का प्रतिफल

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधारभूत भाषाई क्षमता व संख्या समझ के महत्व को रेखांकित करती है। बच्चे यदि कक्षा स्तरीय कौशलों को हासिल नहीं कर पाते हैं तो यह स्थिति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को विफल कर सकती है। हर बच्चा सीखने के अलग-अलग स्तर पर होता है इसलिए प्रत्येक बच्चे की ज़रूरतें भी अलग-अलग हो सकती हैं, जो उनके वर्तमान स्तर से तय होंगी। बहु-स्तरीय कक्षा एक स्वाभाविक स्थिति है लेकिन विगत दो वर्षों के कोरोना काल के कारण यह स्थिति कक्षाओं में और ज़्यादा स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई है। इस नई चुनौती का नई युक्ति के साथ सामना करना होगा।

भाषा केवल एक विषय ही नहीं अपितु अन्य विषयों को समझने का आधार भी है। भाषा शिक्षण की विफलता अन्य विषयों की विफलता का कारण भी बन सकती है। यदि भाषाई कौशलों की बात करें तो सभी कक्षाओं में वे एक जैसे ही होंगे किन्तु कक्षाओं के स्तर बढ़ने के साथ ही इन कौशलों की समझ,अर्थ निर्माण, अभिव्यक्ति, तर्क चिंतन आदि में गहराई एवं जटिलता बढ़ती जाती है और वे निरंतर विकसित होते रहते हैं। पाठ्यपुस्तक में निहित पाठ इन्हीं कौशलों के विकास में सहायक हैं। पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ के साथ उन सीखने के प्रतिफलों को चिन्हांकित किया गया है जिन्हें विकसित करने की संभावना उस पाठ में है। अतः बच्चों के बीच पाठ को ले जाने से पूर्व और गतिविधि निर्माण में उन प्रतिफलों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

शासन द्वारा पाठ्यक्रम पूर्णता की प्रगति को सुनिश्चित करने हेतु हर महीने में प्रत्येक कक्षा में चुनिन्दा पाठ पढ़ाने के लिए निर्धारित किए गए हैं जिन पर कार्य करते हुए बच्चों में सीखने के प्रतिफल आना सुनिश्चित करना है । बच्चों के अलग-अलग स्तर को ध्यान में रखकर तीसरी कक्षा के एक पाठ दादा जी की दिनवार पाठ-योजना तैयार की गई है।

शेष पाठों की योजना इनके आधार पर शिक्षक स्वयं तैयार कर स्तरानुसार भाषाई कौशलों का विकास करें। इस माह प्रत्येक कक्षा के जिन पाठों पर कार्य किया जाना है वे इस प्रकार हैं -

क्रमांक	कक्षा	इस माह में पढ़ाये जाने वाले पाठों के नाम
1.	पहली	लालू और पीलू , बंदर आया
2.	दूसरी	बहुत हुआ , मड़ई मेला
3.	तीसरी	दादा जी ,हाथी ,होनहार लड़का नरेंद्र
4.	चौथी	अनदान के परब -छेरछेरा , ऊर्जा की बचत , चूड़ीवाला
5.	पाँचवीं	जंगल के राम कहानी , रेशम चंदन और सोने की धरती -कर्नाटक , एक और गुरु दक्षिणा
6.	छठवीं	सर्वधर्म समभाव, आलसी राम
7.	सातवीं	भारत बन जाही नंदनवन , शतरंज में मात
8.	आठवीं	अपन चीज के पीरा , विजयबेला ,आतिथ्य

एजेंडा दो: गणित विषय पर कार्य

अक्टूबर माह में कक्षा 1 से 8 तक कक्षावार निम्न पाठों को पढ़ाना है –

कक्षा	1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.
पाठ	7.घटाना	6.भाग	7.भिन्न 8. मापन	6.मापन 7.समय	11.ज्यामितीय 12.लंबाई 13. भार	10.अनुपात 11.चर संख्या 12.बीजीय व्यंजक	10.आरेख 11.परिमेय संख्याओं का दशमलव निरूपण एवं संक्रियाएँ	10.बहुभुज 11.चतुर्भुज की रचना

संकुल बैठक में विस्तृत चर्चा करें कि पाठ योजना बनाते समय किन बातों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए? जैसे-अक्तूबर माह में आप जो पाठ पढ़ाने वाले हैं उनके लिए

- सीखने के प्रतिफल (LOs) कौन -कौन से हैं?
- कितने विद्यार्थी पढ़ाये जाने वाले पाठ के लिए आवश्यक पूर्वज्ञान या सीखने के प्रतिफल (LOs) को प्राप्त कर चुके हैं?
- किस विद्यार्थी को किस पूर्वज्ञान (आवश्यक अवधारणाओं) से अवगत करवाना होगा?
- किस प्रकार की गतिविधि करवाई जाये कि बच्चों को अवधारणाएँ स्पष्ट हों?
- जांच करना कि कक्षा के अधिकतम बच्चों ने सिखायी गयी अवधारणा पर पक्की समझ बना ली है या नहीं ? इसे पता करने के लिए कौन सी गतिविधियां या सवाल होंगे?
- इकाई परीक्षा या summative assessment में बच्चे अधिकतम सवालों को स्वयं से हल कर पा रहे हैं या नहीं ?

<u>उपरोक्त बिंदु को कक्षा 5 में लंबाई और भार पढ़ाने के उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं</u>

सबसे पहले चरण में इस पाठ से संबंधित सीखने के प्रतिफलों से अवगत होना होगा।

इसका मतलब है कि जब हम कक्षा में मापन (लंबाई तथा भार) पढ़ा रहे हों तो बच्चो को नीचे दिए गए सीखने के प्रतिफल (LOs) आ जाने चाहिए अर्थात उनसे सम्बंधित कोई भी प्रश्न दिए जाने पर बच्चे उन्हें हल कर पाएं।

कक्षा 1

- छोटी लंबाइयों का अनुमान लगाते हैं, अमानक इकाइयों जैसे– उँगली, बित्ता, भुजा, कदम आदि की सहायता से मापते हैं।

कक्षा 2

- लंबाइयों/ दूरियों तथा बर्तनों की धारिता का अनुमान लगाते हैं तथा मापन के लिए एक-समान परंतु अमानक इकाइयों जैसे – छड़/पेंसिल, कप/ चम्मच / बाल्टी इत्यादी का प्रयोग करते हैं।
- सामान्य तुला का प्रयोग करते हुए वस्तुओ की 'से भारी'/'से हल्की ' शब्दों का उपयोग करते हुए तुलना करते हैं।

कक्षा 3

- अमानक इकाइयों का प्रयोग कर विभिन्न बर्तनों की धारिता की तुलना करते हैं।

- ❖ मानक इकाइयों, जैसे – सेंटीमीटर, मीटर का उपयोग कर लंबाइयों तथा दूरियों का अनुमान एवं मापन करते हैं। इसके साथ ही इकाइयों में संबंध की पहचान भी करते हैं।
- ❖ मानक इकाइयों ग्राम, किलोग्राम तथा साधारण तुला के उपयोग से वस्तुओं का भार मापते हैं।
- ❖ दैनिक जीवन की स्थितियों में ग्राम, किलोग्राम मापों को जोड़ते और घटाते हैं।

कक्षा 4

- ❖ दैनिक जीवन के संदर्भ में मुद्रा, लंबाई, भार, धारिता से संबंधित चार संक्रियाओं पर आधारित प्रश्न बनाते हैं तथा हल करते हैं।
- ❖ सरल ज्यामितीय आकृतियों (त्रिभुज, आयत, वर्ग) का क्षेत्रफल तथा परिमाप एक दी हुई आकृति को इकाई मानकर ज्ञात करते हैं जैसे- किसी टेबल की ऊपरी सतह को भरने के लिए एक जैसी कितनी किताबों की आवश्यकता पड़ेगी।
- ❖ मीटर को सेंटीमीटर एवं सेंटीमीटर को मीटर में बदलते हैं।
- ❖ किसी वस्तु की लंबाई, दो स्थानों के बीच की दूरी, विभिन्न वस्तुओं के भार, द्रव का आयतन आदि का अनुमान लगाते हैं तथा वास्तविक माप द्वारा उसकी पुष्टि करते हैं।

कक्षा 5

- ❖ सामान्यतः प्रयोग होने वाली लंबाई, भार, आयतन की बड़ी तथा छोटी इकाइयों में संबंध स्थापित करते हैं तथा बड़ी इकाइयों को छोटी व छोटी इकाइयों को बड़ी इकाई में बदलते हैं।
- ❖ ज्ञात इकाइयों में किसी ठोस वस्तु का आयतन ज्ञात करते हैं जैसे – एक बाल्टी का आयतन जग के आयतन का 20 गुना है।
- ❖ पैसा, लंबाई, भार, आयतन तथा समय अंतराल से संबंधित प्रश्नों में चार मूल गणितीय संक्रियाओ का उपयोग करते हैं।

लेकिन पाठ की शुरुआत करने से पहले बच्चों को मापन से सम्बंधित कुछ पूर्व जानकारी भी होना चाहिए अन्यथा बच्चों को पढ़ाने में बहुत चुनौती आएगी। इसे कक्षा 5 के एक उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं-

1. लंबाई तथा भार की मानक इकाइयों की समझ के लिए कक्षा 5 के बच्चों के लिए आवश्यक पूर्वज्ञान नीचे दिये गए हैं, यदि बच्चों को यह नहीं आते हैं तो उसपर पहले कार्य करना होगा, तभी आगे बढ़ना चाहिए:
   - ✓ छोटी लंबाइयों का अनुमान लगाते हैं। अमानक इकाइयों जैसे– उँगली, बित्ता, भुजा, कदम आदि की सहायता से मापते हैं।
   - ✓ लंबाइयों/ दूरियों तथा बर्तनों की धारिता का अनुमान लगाते हैं तथा मापन के लिए एक समान परंतु अमानक इकाइयों जैसे– छड़/पेंसिल, कप/ चम्मच / बाल्टी इत्यादी का प्रयोग करते हैं।
   - ✓ सामान्य तुला का प्रयोग करते हुए वस्तुओं की 'से भारी/से हल्की' शब्दों का उपयोग करते हुए तुलना करते हैं।
   - ✓ अमानक इकाइयों का प्रयोग कर विभिन्न बर्तनों की धारिता की तुलना करते हैं।
   - ✓ मानक इकाइयों जैसे – सेंटीमीटर, मीटर का उपयोग कर लंबाइयों तथा दूरियों का अनुमान एवं मापन करते हैं। इसके साथ ही इकाइयों में संबंध की पहचान करते हैं।
   - ✓ मानक इकाइयों ग्राम, किलोग्राम तथा साधारण तुला के उपयोग से वस्तुओं का भार मापते हैं।
   - ✓ दैनिक जीवन की स्थितियों में ग्राम, किलोग्राम की मापों को जोड़ते और घटाते हैं।

- ✓ दैनिक जीवन के संदर्भ में लंबाई, भार, धारिता से संबंधित चार संक्रियाओं पर आधारित प्रश्न बनाते हैं तथा हल करते हैं।
- ✓ मीटर को सेंटीमीटर और सेंटीमीटर को मीटर में बदलते हैं ।
- ✓ किसी वस्तु की लंबाई, दो स्थानों के बीच की दूरी, विभिन्न वस्तुओं के भार, द्रव का आयतन आदि का अनुमान लगाते हैं तथा वास्तविक माप द्वारा उसकी पुष्टि करते हैं।

2. शिक्षक को अपनी कक्षा के बच्चों का स्तर पता रखना होगा जैसे कि किस बच्चे को ऊपर दी गई पूर्व अवधारणाओं में से कौन-कौन सी अवधारणाएँ आती हैं और किन अवधारणाओं पर किस बच्चे के साथ कार्य करने की आवश्यकता है! बच्चों का स्तर पता करने के लिए आवश्यक पूर्वज्ञान संबन्धित सवाल/ गतिविधि बच्चों से करवाएँ। उदाहरण के लिए –

   शिक्षक अलग-अलग लंबाई वाली पेंसिल या लकड़ी के 5-6 टुकड़े/तिनके बच्चों को देंगे और बच्चों से निम्न सवाल करेंगे :

   अ- इनमें से कौन-सा तिनका सबसे लंबा है?

   ब- इनमें से कौन-सा तिनका सबसे छोटा है?

   स- इन सींकों को बड़े से छोटे के क्रम में सजाओ।

   द- हल्की वस्तु पर गोल घेरा लगाओ

   शिक्षक और सवाल भी लें जिससे उन्हें बच्चों के स्तर को जानने में मदद मिलेगी।

3. बच्चों के पूर्वज्ञान को समझते हुए अपनी कक्षा के बच्चों के लिए योजना का निर्माण करें।

कक्षा 5 में मापन पाठ की योजना का एक नमूना

उदाहरण के तौर पर अगर कक्षा 5 में 20 बच्चे हैं और उन बच्चों में से-

- 7 बच्चे लंबाई संबंधी अमानक इकाई वाले सवाल हल नहीं कर पाते हैं।
- 4 बच्चे अमानक इकाई से हल्की और भारी वस्तु से संबन्धित सवाल नहीं बना पाते हैं।
- 2 बच्चे अमानक इकाई का प्रयोग कर विभिन्न बर्तनों की धारिता की तुलना नहीं कर पाते हैं।
- 10 बच्चे मानक इकाई से लंबाई और दूरी को अनुमान लगा कर या माप कर नहीं बता पाते हैं।
- मात्र 3 बच्चे ग्राम किलोग्राम के माप वाले जोड़- घटा कर पाते हैं।
- एक भी बच्चा इकाई परिवर्तन वाले सवाल को हल नहीं कर पाता है।

अगर इस कक्षा को देखें तो यहाँ पर बच्चों के दो स्तर दिखाई देते हैं- **कक्षा स्तर से पीछे और FN (आधारभूत) स्तर पर।** अतः शिक्षक को योजना ऐसी बनानी होगी जिससे कि सभी बच्चों के साथ उनके सीखने के स्तर में सुधार करते हुए सभी बच्चों को कक्षा स्तर तक ला पाएँ।

नीचे दी गयी योजना को समझने के लिए कक्षा 3, कक्षा 4 और कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तक को साथ में रखें और निर्देश के अनुसार कक्षा की पाठयपुस्तक में दी गयी गतिविधियों को देखते जाएँ।

योजना कुछ इस प्रकार की हो सकती है, जिसमें शिक्षक द्वारा अपनी जरूरत के अनुसार थोड़ा बहुत बदलाव करने की संभावना होगी :

चरण	FN स्तर के बच्चे	कक्षा स्तर से पीछे
1.	कक्षा स्तर से पीछे के बच्चों को काम देने के बाद इन बच्चों के साथ कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक के पाठ 8 की पृष्ठ संख्या 108 में दी गयी (**हाथ, कदम, बालिश्त आदि अमानक इकाइयों से अलग-अलग वस्तुओं की लंबाई मपवाना**) गतिविधि जैसे कार्य करवा सकें। गतिविधि करवाते समय इन बच्चों के साथ माप के लिखने की प्रक्रिया के साथ-साथ अलग-अलग हाथ से नापने में माप के हुए अंतर पर भी बात करेंगे।	पहले इन बच्चों को कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक के पाठ 6 की पृष्ठ संख्या 59 में दी गयी गतिविधि **(अलग-अलग दूरी को मीटर और सेंटीमीटर में अनुमान से और स्केल से माप कर लिखवाना)** करवाएँ। यह शिक्षक को सुनिश्चित करना होगा कि हर बच्चा इस गतिविधि को करे। चूंकि ये गतिविधि समय लेगी इसलिए इस तरह की गतिविधि अगले दिन भी करवाएंगे।
2.	इस चरण में शिक्षक दोनों स्तर के बच्चों को एक साथ लेकर कार्य करेंगे। जिसमें मीटर स्केल और उसके प्रयोग करने के तरीके आदि को समझाने के लिए कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 109 से 113 तक दी गयी गतिविधि **(मीटर स्केल के बारे में बताना, बच्चों से स्केल बनवाना, स्केल के माध्यम से अलग-अलग वस्तुओं को नपवाना आदि)** करवानी है। इसके साथ ही स्केल के प्रयोग के तरीके, उसके प्रकार, आवश्यकता, छोटी इकाई, बड़ी इकाई की समझ आदि पर विस्तृत रूप से बातचीत करना तथा बच्चों को स्वयं (खुद) से करके देखने का पर्याप्त अवसर देना।	
3.	दोनों स्तर के बच्चों के साथ कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 61 से 62 में दी गयी गतिविधि **(मीटर और सेंटीमीटर की समझ, कितने सेंटीमीटर और मीटर आपस में बराबर होंगे आदि)** करवाना।	
4.	कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 63 से 64 में दी गयी जोड़ संबंधी गतिविधि (**जैसे 18 मीटर 20 सेंटीमीटर + 29 मीटर 80 सेंटीमीटर, वाले इबारती सवाल आदि)** जैसी गतिविधि करवाना।	
5.	कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 65 से 66 में दी गयी घटाने से संबंधित गतिविधि(**जैसे 58 मीटर 20 सेंटीमीटर - 29 मीटर 10 सेंटीमीटर, इबारती सवाल आदि)** करवाना।	
6.	कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तक के पाठ 12, पृष्ठ संख्या 132 में दी गयी गतिविधि करवाते हुए इकाई परिवर्तन की ज़रूरत और आवश्यकता पर बच्चों की समझ बनाना (**जैसे मीटर को सेंटीमीटर में बदलना आदि)**	
7.	आकलन (**लंबाई संबंधी समस्त अवधारणाओं पर आकलन करना और जांच करना कि कितने बच्चे सही तरीके से हल कर पा रहे हैं**)	
8.	कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक में भार पाठ की पृष्ठ संख्या 114 से 115 में दी गयी बाट संबंधी गतिवधि(**जैसे अलग- अलग तराजू और बाट से परिचित करवाना, किलोग्राम और ग्राम के बाट से परिचित करवाना आदि)** जैसी गतिविधि करवाना और बातचीत करना।	
9.	कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 67 से 68 में दी गई (**ग्राम और किलोग्राम में संबंध वाली)** गतिविधि करवाना और संबन्धित बातचीत करना।	
10.	कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 68 से 69 में भार के जोड़ संबंधी (**14किलोग्राम 50 ग्राम + 35किलोग्राम 75 ग्राम, इबारती सवाल आदि**) गतिविधि करवाना।	
11.	कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 69 में भार के घटाने संबंधी गतिविधि करवाना जैसे (**54किलोग्राम 50 ग्राम - 35किलोग्राम 25 ग्राम इबारती सवाल आदि)**	
12.	कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या 70 में भार के संक्रिया संबंधी गतिविधि करवाना।	
13.	कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तक पृष्ठ संख्या 136 से 137 में दी गयी (**भार के इकाई परिवर्तन संबंधी गतिविधि**) जैसी गतिविधि करवाना और बातचीत करना।	
14.	पिछले चरण में करवाई गयी गतिविधि आधारित अवधारणा का अभ्यास	
15.	समेकित रूप से आकलन	

एजेंडा तीन: हमारे नायक की अगली श्रृंखला

विगत तीन वर्षों से हमारे नायक में थीम बदल बदल कर हम बेहतर कार्य कर रहे शिक्षकों के कार्यों के आधार पर हमारे नायक में उनके कार्यों को पहले ब्लॉग के रूप में और अब वीडियो के रूप में स्थान देते आ रहे हैं। आगामी श्रंखला में हम ऐसे शिक्षकों को हमारे नायक में स्थान देंगे जो FLN के अंतर्गत विभिन्न लर्निंग आउटकम को नवाचारी तरीकों से सीखने में सहयोग प्रदान करने हेतु छोटे वीडियो बनाकर भेजते हैं। इनमें से बेहतर पद्धति वाले वीडियो का चयन कर उन शिक्षकों को हमारे नायक में स्थान देते हुए उन्हें सम्मानित करेंगे। आपसे अनुरोध है कि अधिक से अधिक शिक्षक अपनी कक्षा या बाहर FLN से संबंधित मुद्दों पर छोटे वीडियो बनाकर charchapatra@gmail.com में भेजें। (वर्ण-मात्रा-पठन-गिनती-जोड़ घटाव गुणा भाग....)

एजेंडा चार: TLM मेला

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत कबाड़ से जुगाड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन करने हेतु प्रत्येक विकासखंड में रूपए तीस हजार का प्रावधान किया गया है। इस बार कबाड़ से जुगाड़ प्रतियोगिताओं के लिए Foundational Literacy & Numeracy (FLN) को थीम बनाकर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना है। सभी प्राथमिक शालाओं से प्रथम चरण में संकुल स्तर पर यह प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इस दिन प्रत्येक शाला से रोचक एवं प्रभावी TLM बनाकर शिक्षक अपने संकुल में लेकर जाएंगे। संकुल में TLM की उपादेयता, सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका, उपयोग में आसानी, रख-रखाव एवं लंबी अवधि तक उपयोग कर सकने की क्षमता आदि को ध्यान में रखते हुए बेस्ट TLM का चयन किया जाएगा।

द्वितीय चरण में यही प्रतियोगिता विकासखंड स्तर पर आयोजित की जाएगी। सभी संकुल से बेस्ट चयनित TLM को विकासखंड स्तर पर आयोजित मेले में प्रदर्शित किया जाएगा। विकासखंड स्तर पर बेस्ट TLM का चयन किया जा सकेगा।

तृतीय चरण में विकासखंड स्तर पर चयानित बेस्ट TLM को जिले स्तर पर आयोजित मेले में प्रदर्शित किया जाएगा। जिले में इस मेले से बेस्ट TLM का चयन किया जा सकेगा।

विकासखंड एवं जिले स्तर पर "कबाड से जुगाड़" मेले के आयोजन के लिए प्रत्येक विकासखंड एवं जिले को रूपए तीस हजार उपलब्ध करवाए जाएंगे। इस राशि से हम मुख्य रूप से निम्न कार्यों हेतु व्यय कर सकेंगे–

- विकासखंड एवं जिला स्तर पर TLM मेले के आयोजन पर होने वाला व्यय
- विकासखंड एवं जिला स्तर पर प्रतिभागियों के आने-जाने पर होने वाला व्यय
- विकासखंड एवं जिला स्तर पर चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं सर्टिफिकेट
- चयनित बेस्ट TLM निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी हेतु वीडियोग्राफी एवं यूट्यूब

इस प्रकार चयनित बेस्ट TLM के वीडियो को स्कूलों के साथ साझा करेंगे। स्कूल अपने स्कूल अनुदान का उपयोग कर इन TLM को बनाकर शिक्षण के दौरान उनका उपयोग कर सकेंगे।

एजेंडा पांच: पोस्टर पढ़ें

विगत वर्ष राज्य की ओर से सभी शालाओं को विभिन्न थीम जैसे शाला सुरक्षा, स्वच्छता, लर्निंग आउटकम, समुदायिक सहभागिता आदि पर बहुत से पोस्टर बनाकर भेजे गए हैं। ये पोस्टर्स बकायदा स्कूल की दीवारों पर प्रदर्शित भी किए गए हैं। इन पोस्टर को स्कूल में प्रदर्शित करने का उद्देश्य उन मुद्दों पर जागरूकता विकसित करना है। इस हेतु आप बच्चों को अलग अलग पोस्टर को पढ़कर उस पर थोड़ा चिंतन कर उस पर अपने विचार अपने सहपाठियों के साथ साझा करने का अवसर देवें। सभी पोस्टर की जानकारी इस प्रकार से समय निकालकर सभी बच्चों के साथ साझा कर सभी को जागरूक करें।

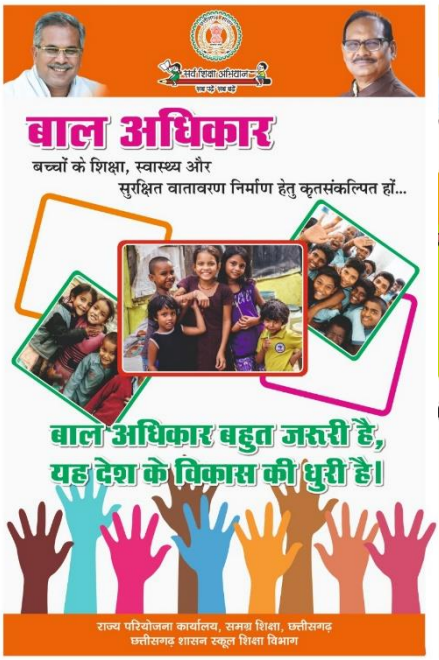

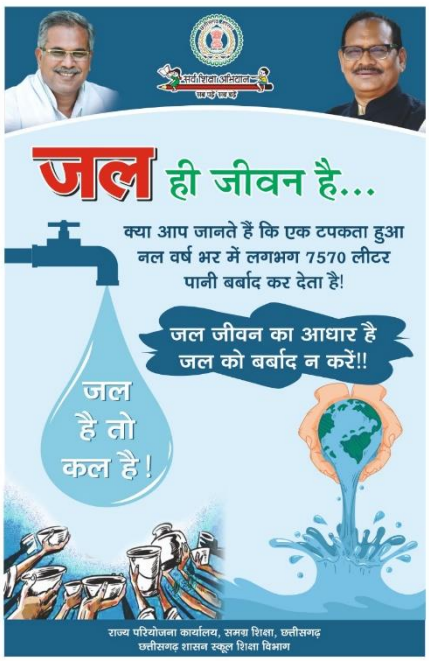

एजेंडा छह: पोषण भी पढ़ाई भी

जिस प्रकार किसी भवन के निर्माण में सरिये का बहुत महत्व होता है, उसी प्रकार बच्चे की पढाई में उसके पोषण का बहुत अधिक महत्व होता है ! स्कूलों में पोषण कार्यक्रम बच्चों को सीखने में सहयोग करता है ! NEP 2020 में पोषण के संबंध में ये बाते लिखी गयी हैं-

- दोपहर के मध्याह्न भोजन कार्यक्रम को प्राथमिक विद्यालय के साथ-साथ तैयारी कक्षाओं तक भी विस्तारित किया जाना चाहिए !
- जब बच्चे कुपोषित या अस्वस्थ होते हैं तो वे बेहतर रूप से सीखने में असमर्थ हो जाते हैं।
- कई सारे अध्ययन से यह पता चलता है कि सुबह के पौष्टिक नाश्ते के बाद के कुछ घंटे में कई सारे मुश्किल विषयों का अध्ययन अधिक प्रभावी होता है।
- उत्पादक और प्रभावी समय का लाभ उठाया जा सकता है, यदि सुबह और दोपहर में बच्चों को क्रमशः पौष्टिक नाश्ता और भोजन दिया जाए। जहां पके हुए गर्म भोजन की व्यवस्था करना संभव नहीं होगा, वहां सादा लेकिन पौष्टिक विकल्प, जैसे गुड के साथ मूंगफली/ गुड मिश्रित चना और/ या स्थानीय स्तर पर उपलब्ध फल उपलब्ध करवाया जा सकता है।

पढ़ाई के साथ पोषण पर ध्यान देने हेतु निम्नलिखित टिप्स को ध्यान में रखना होगा-

- टिप्स # एक: शासकीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार करें।
- टिप्स # दो: पौष्टिक भोजन के महत्व को स्कूलों एवं गाँवों में प्रिंट-रिच वातावरण के माध्यम से साझा करें !
- टिप्स # तीन: प्रत्येक शाला में किचन गार्डन बनवाएं। जगह न हों तो छत या दीवार पर भी सब्जी उगाएं !
- टिप्स # चार: अपने घर एवं स्कूल के किचन गार्डन में भाजी अवश्य लगवाएं।
- टिप्स # पांच: स्कूलों में कार्यरत स्व-सहायता समूहों के रसोइयों को पौष्टिक एवं स्वच्छ भोजन बनाने हेतु प्रशिक्षित करें।
- टिप्स # छह: प्रत्येक कक्षा में एक पोषण मानिटर या स्कूल में बाल केबिनेट में एक बच्चे को स्वच्छता मंत्री बनाकर उसे अन्य बच्चों की सफाई, बाल, नाखून काटने से संबंधित मुद्दों को जांचने की जिम्मेदारी देवें।
- टिप्स # सात: पालकों विशेषकर माताओं को पोषण से संबंधित अच्छी आदतों की जानकारी देते हुए उन्हें इसे अपने व्यवहार में लाने हेतु प्रयास करें !
- टिप्स # आठ: शिक्षकों एवं पालकों के माध्यम से बच्चों को जंक फूड से दूरी बनाने हेतु प्रेरित करें !
- टिप्स # नौ: समय समय पर समुदाय को बच्चों के लिए स्कूल में रुचिकर एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाने तिथि भोज का आयोजन करने प्रेरित करें।
- टिप्स # दस: शालाओं में दिए जाने वाले भोजन की समय समय पर सोशियल ओडिट करवाएं।

एजेंडा सात: बेसलाइन आकलन

i. इस वर्ष उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाविता के आकलन हेतु बेसलाइन एवं एंडलाइन आकलन लिया जाने वाला है | बेसलाइन आकलन माह अक्टूबर एवं एंडलाइन आकलन माह जनवरी में आयोजित होना है | यह आकलन कक्षा छठवीं से बारहवीं तक के लिए होगा | इन आकलन का मुख्य उद्देश्य बच्चों की वर्तमान स्थिति, उन क्षेत्रों की पहचान करना जिनमें प्रत्येक विद्यार्थी को सुधार हेतु आवश्यक इनपुट दिया जाना है एवं कार्यक्रम में दिए गए इनपुट के आधार पर विद्यार्थियों में हुए सुधार का आकलन करना है | प्रत्येक प्रश्नपत्र में निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न पूछे जाएंगे एवं उनका वितरण इस प्रकार से होगा-

#	प्रश्नों के प्रकार	कुल प्रश्न	प्रति प्रश्न अंक	अधिकतम अंक
1	रिक्त स्थान की पूर्ति	4	1	4
2	लघु उत्तरीय प्रश्न	8	4	32
3	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	2	7	14
		14 प्रश्न		50 अंक

ii. प्रश्नों को तैयार करते समय ध्यान देने योग्य बातें

a. रटने को बढ़ावा देने वाले प्रश्नों को शामिल नहीं करने का प्रयास करें

b. प्रश्न ऐसे हों जो सोचने समझने के लिए प्रोत्साहित करते हों

c. प्रश्न की भाषा सरल एवं स्पष्ट हो और किसी प्रकार के शंका की संभावना न हो

d. ऐसे प्रश्न देने के प्रयास किए जाएं जिसमें पहले भाग में प्रकार या संख्या पूछी गयी हो और दूसरे भाग में उनमें से कुछ विकल्प की जानकारी देनी हो | उदाहरण के लिए राज्य में कुल कितने जिले हैं ? किन्हीं चार जिलों के नाम लिखें |

e. प्रश्न ऐसे हों कि उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच के समय हम इन बातों को भी ध्यान दे सकेंगे
   - बच्चों के स्तर का अनुमान लगा सकें
   - कितने बच्चों से साथ मूलभूत दक्षताओं में सुधार के लिए कार्य करना है जाना जा सके
   - कितने बच्चों की लेखनी में सुधार लाए जाने की आवश्यकता है
   - क्या किसी केंद्र में
     - बच्चों ने एक दूसरे के उत्तर देखकर नकल की है
     - क्या बच्चों को श्यामपट पर लिखकर उतारने/ नकल के अवसर दिए गए हैं
     - क्या बच्चों के उत्तरों को अन्य किसी के द्वारा लिखा गया है | लेखनी एक जैसी है

f. बच्चों के स्तर को हम तीन भागों में वर्गीकृत कर सकेंगे-
   - शुरुआती स्तर (Beginner level -BL)
   - वर्तमान कक्षा के पीछे का स्तर (Below class level -BCL)
   - वर्तमान कक्षा का स्तर (Class appropriate level- CAL)

g. स्तर के साथ अंक देते समय इन बातों को ध्यान में रखेंगे कि लर्निंग आउटकम ठीक से हासिल होने की स्थिति में उसे पूरे अंक मिलेंगे और ठीक से हासिल नहीं हुआ तो शून्य !

एजेंडा आठ: दानोत्सव

गांधीजी ने कहा था की ' जो बदलाव हम देखना चाहते हैं वह बदलाव हम खुद बनें | दान करना भारतवासियों की प्राचीन परंपरा रही है जहाँ हर व्यक्ति अपनी क्षमता अनुसार कुछ न कुछ दान देता रहा है| यह जरूरी नहीं है की दान सिर्फ धन का किया जाये, हम अपने समय का , कौशल का, ज्ञान का दान भी कर सकते हैं |

अक्टूबर 2- 8 पूरे भारत में दान का त्यौहार मनाया जा रहा है और हम भी अपनी शालाओं में और समुदाय के साथ इसका हिस्सा बन सकते हैं| यह एक सुनहरा अवसर है जहां पर समुदाय और शाला का संबंध और सुदृढ़ किया जा सकता है| इसी सन्दर्भ में कुछ रोचक प्रयास किया जा सकता हैं:

- शालाओं में शिक्षकों और बच्चों की साथ कार्यरत कर्मचारी जैसे चपरासी, भृत्य, सफाई कर्मचारी, मध्यान भोजन सहायक, सहायिका के लिए "आभार समारोह" जिसमे विद्यार्थी एवं शिक्षक उन्हें इनके द्वारा किये जा रहे कार्य के लिए धन्यवाद रूप में सम्मानित करें |
- विद्यार्थी श्रम दान के रूप में अपने गाँव के बुजुर्ग की सेवा कर सकते हैं, या नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में सफाई अभियान चला सकते हैं अथवा मिल कर सजा सकते हैं|
- शासन द्वारा चलाये जा रहे विद्यांजली अभियान से जुडने के लिए समुदाय में प्रचार कर सकते हैं जहां समुदाय के सदस्यों को निमंत्रण दिया जा सकता है | यदि कोई पहले से ही अपनी सेवा दे रहा हो तो उन्हे आभार के साथ सम्मानित कर सकते हैं|
- विद्यार्थी पौधे, बर्ड फीडर (पुरानी बॉटल को काट कर पक्षियों के लिए खाने की व्यवस्था) बना कर किसी को उपहार स्वरूप दे सकते हैं|
- गाँव में जहां हैंड पम्प , नल इत्यादि ऐसी जगह जहां पानी इकट्ठा होता है और मच्छर का खतरा होता है वहाँ सोकता गड्ढा बना सकते हैं|
- बड़े बच्चे छोटे बच्चों (उदाहरण प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे बालवाड़ी में) को कहानियाँ सुना सकते हैं या पढ़ाई में सहयोग कर सकते हैं | अगर उनमे कोई विशेष कौशल हो तो वो भी सिखा सकते हैं|
- कुछ और आइडिया के लिए देखें- https://7days7giving.weebly.com/hindi.html

कांकेर जिले के सुदूर अंचल के एक गाँव से विपरीत परिस्थितियों एवं कठिनाइयों के बावजूद पढ़ लिखकर आईएएस बने श्री नरेंद्र दुग्गा जी अपने पालक स्व. श्री रामसाय दुग्गा जी एवं स्व. श्रीमती सुबारो बाई जी की स्मृति में 12वीं की बोर्ड परीक्षा में शाला के सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 01 बालक एवं 01 बालिका को प्रतिवर्ष आगे की शिक्षा के लिए 10-10 हजार रूपए एवं अपने बड़े पिता एवं माता स्व. श्री मनहेर एवं स्व. श्रीमती फुलमा बाई जी की स्मृति में कक्षा 10वीं में बोर्ड परीक्षा में शाला के सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 01 बालक एवं 01 बालिका को पुरस्कार स्वरूप रु. 5,000/- प्रोत्साहन राशि के रूप में प्रति वर्ष प्रदान कर गाँव के बच्चों की शिक्षा को आगे बढाने हेतु प्रोत्साहित कर रहे हैं |

दान उत्सव के बारे में (http://daanutsav.org/)-दान उत्सव (पूर्व नाम: जॉय ऑफ़ गिविंग वीक /joy of giving week) भारत का 'खुशियों का त्यौहार' है जिसमे खुशियाँ लेने से नहीं बल्कि देने से मिलती हैं |

आइये आप भी अपने आसपास दानोत्सव मनाते हुए खुशियाँ बांटने में सहयोग प्रदान करें !

एजेंडा नौ: जमीनी हकीकत जानकर स्थिति में सुधार

राज्य में स्कूली शिक्षा में बच्चों के सीखने-सिखाने के स्तर एवं जमीनी वास्तविकताओं का अनुभव लेने स्कूल शिक्षा विभाग के प्रमुख अधिकारीगण महासमुंद जिले के एक गाँव के प्राथमिक स्कूल का अवलोकन करने पहुंचे। इस दौरान निम्नलिखित तथ्य सामने आएं-

- प्राथमिक शाला में कुल 7 शिक्षक कार्यरत हैं और कक्षा एक से पांच तक कुल 143 बच्चे दर्ज हैं।
- इसी परिसर में एक आंगनबाडी भी संचालित है जहां इस प्राथमिक शाला की बालवाडी प्रशिक्षित शिक्षिका दो घंटे बालवाडी के बच्चों को कक्षा एक के साथ बिठाकर अध्यापन करवाती हैं
- कुल दर्ज 143 में से औसतन 120 बच्चे ही प्रतिदिन शाला में उपस्थित होते हैं। उपस्थिति का प्रतिशत 87% है
- कक्षाओं में आमतौर पर कुछ सीख चुके बच्चे को श्यामपट के पास खडा कर उसे अन्य बच्चों को पढ़कर दोहराने का जिम्मा दिया जाता है। यह विधि बरसों से चल रही है और शिक्षकों को नई विधियों का ज्ञान नहीं है
- शिक्षक विद्यार्थी अनुपात बहुत कम है लेकिन फिर भी पूरे दिन कक्षा संचालन के दौरान शिक्षकों द्वारा बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान (individual attention) बहुत कम या नहीं के बराबर दिया जाता है
- कक्षा में अधिकांश बच्चों को उनके स्तर अनुरूप मूलभूत दक्षताओं में भी कमी दिखाई दी। बच्चों को पढ़ना-लिखना एवं गणित के सरल सवाल भी हल करना नहीं आता
- संकुल समन्वयक नियमित रूप से स्कूल आते हैं, बच्चों की उपलब्धि की जाँच करते हैं

स्कूल में मूलभूत सुविधाएँ एवं सब कुछ अनुकूल होने के बावजूद भी बच्चे सीखने के मामले में बहुत पीछे हैं। यदि इस प्रकार की स्थिति आपके संकुल की कुछ शालाओं में हो तो आप इन स्कूलों में बच्चों की पढाई के स्तर को सुधारने हेतु क्या कुछ कर सकते हैं, संकुल की बैठक में चर्चा कर स्थिति में तत्काल सुधार हेतु ठोस एक्शन लेवें। अब आगे यह सब नहीं चलना चाहिए। कुछ उपाय इस प्रकार हैं-

- अनियमित अनुपस्थिति वाले बच्चों की सूची बनाकर उन्हें नियमित करने हेतु तत्काल काम करें
- संकुल समन्वयक तत्काल पीएलसी के सहयोग से बच्चों में मूलभूत दक्षताओं एवं कौशलों के विकास हेतु शिक्षकों को टिप्स देते हुए स्थिति में सुधार लाए जाने हेतु गंभीरता दिखाएं।
- यदि आप इस दिशा में गंभीर हैं और अपने साथियों के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ से ऐसी स्थिति को दूर भगाना चाहते हैं तो कृपया टेलीग्राम के इस ग्रुप में जुड़कर पढ़ना लिखना और गणित सीखने हेतु कुछ टिप्स एवं आपसी चर्चा के लिए ग्रुप का उपयोग करें - https://t.me/+Ihjt8-yBxks1NzM1
- जो शिक्षक अपने साथियों से इन बिन्दुओं पर नवीन प्रविधियों को सीखना चाहते हैं वे भी इस ग्रुप में जुड़कर ट्रेनिगं आन डिमांड का लाभ ले सकते हैं। इस अभियान से जुड़े और इस अभिशाप से शीघ्र मुक्ति दिलावें

एजेंडा दस: चलते चलते

माह नवंबर में अगला असर टेस्ट होना है। स्कूलों में बच्चों में मूलभूत कौशल भी ठीक से नहीं आते। बहुत से स्कूल अभी भी इस दिशा में बिलकुल गंभीर नहीं हैं। इसके लिए संकुल समन्वयकों को त्वरित एक्शन लेते हुए सभी शालाओं में अंगना म शिक्षा, उपचारात्मक शिक्षण, कहानी सुनाना, गणित किट का उपयोग कर ढेर सारे अभ्यास करवाना, अंग्रेजी से परिचय, खिलौना किट एवं मुस्कान पुस्तकालय का उपयोग एवं नियमित उपस्थिति एवं सभी शालाओं में सीखने में सक्रियता बढाए जाने हेतु कार्य करें।